

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 14: पुरुरवा

26 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



उनकी कीर्ति एवं सौन्दर्य से आकर्षित होकर, अप्सरा उर्वशी राजा पुरुरवा के दरबार में उतरती हैं — एक ऐसे प्रेम का आरम्भ जो आसक्ति का दुःख सिखाएगा और पवित्र अग्नि की खोज में समाप्त होगा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह चौदहवाँ अध्याय सूर्यवंश से मुड़कर चन्द्रदेव सोम के पवित्र चन्द्रवंश की ओर जाता है, और राजा पुरुरवा के अप्सरा उर्वशी के प्रति मार्मिक प्रेम को त्रेता युग के आरम्भ में पवित्र अग्नि की खोज तक ले जाता है।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 14 (चतुर्दश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: उर्वशी पर मोहित राजा पुरुरवा
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: स्वर्ग एवं पृथ्वी; राजा पुरुरवा का दरबार; सरस्वती तट पर कुरुक्षेत्र
- केन्द्रीय विषय: सोम से चन्द्रवंश की उत्पत्ति, बुध का जन्म, और अप्सरा उर्वशी के प्रति राजा पुरुरवा का प्रेम, जो पवित्र अग्नि की खोज में समाप्त होता है
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 1-49
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

चन्द्रमा की उत्पत्ति और बुध का जन्म

शुकदेव अब चन्द्रदेव सोम के पवित्र वंश की ओर मुड़े। ब्रह्मा से एक पुत्र अत्रि हुए, गुणों में अपने पिता के समान; और अत्रि के आनन्दाश्रुओं से सोम उत्पन्न हुए, अमृत के मूर्तरूप, जिन्हें ब्रह्मा ने ब्राह्मणों, औषधियों एवं नक्षत्रों का स्वामी नियुक्त किया।

तस्य दृग्भ्योऽभवत् पुत्रः सोमोऽमृतमयः किल ।

विप्रौषध्युदुगणानां ब्रह्मणा कल्पितः पतिः ॥ ३ ॥

tasya dṛgbhyo 'bhavat putraḥ somo 'mṛtamayaḥ kila viprauṣadhy-uḍu-gaṇānām brahmaṇā kalpitaḥ patih

अर्थ: सोम, हर्ष के आँसुओं से प्रकट अत्रि-पुत्र, मानो अमृत से रचित थे; ब्रह्मा ने उन्हें द्विजों अर्थात् ब्राह्मणों, औषधियों एवं असंख्य नक्षत्रों का अधिपति नियुक्त किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 3)

तीनों लोकों को जीतकर और राजसूय यज्ञ द्वारा भगवान् की आराधना करके, सोम अभिमानी हो उठे और देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा को बलपूर्वक हर ले गए। बार-बार लौटाने को कहे जाने पर भी, उन्होंने अभिमानवश उसे नहीं लौटाया, और तारा के लिए देवताओं एवं असुरों के बीच एक महान् युद्ध छिड़ गया।

सोऽयजद् राजसूयेन विजित्य भुवनत्रयम् ।

पत्नीं बृहस्पतेर्दर्पात् तारां नामाहरद् बलात् ॥ ४ ॥

so 'yajad rājasūyena vijitya bhuvana-trayam patnīm bṛhaspater darpāt tārām nāmāharad balāt

अर्थ: तीनों लोकों को जीतकर और राजसूय यज्ञ करके, सोम ने अभिमानवश बृहस्पति की पत्नी तारा को बलपूर्वक हर लिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 4)



तीनों लोकों को जीतकर अभिमानी हुए चन्द्रदेव सोम बृहस्पति की पत्नी तारा को लौटाने से इनकार कर देते हैं, और देवताओं एवं असुरों के बीच एक महान् युद्ध छिड़ जाता है
— जब तक ब्रह्मा हस्तक्षेप करके उसे लौटा नहीं देते (श्लोक 4-8)।

अन्ततः ब्रह्मा ने सोम को फटकारा और तारा को उसके पति को लौटा दिया। वह गर्भवती पाई गई, और समय पाकर स्वर्ण-सा दीप्तिमान् एक पुत्र को जन्म दिया। जब सोम एवं बृहस्पति दोनों ने बालक पर अपना दावा किया, तब ब्रह्मा ने तारा से मृदुता से सत्य निकाला, जिसने स्वीकार किया कि बालक सोम का है। ब्रह्मा ने तब बालक का नाम बुध, “बुद्धिमान्,” रखा, उसकी गम्भीर बुद्धि के कारण।

तस्यात्मयोनिरकृत बुध इत्यभिधां नृप ।

बुद्ध्या गम्भीरया येन पुत्रेणापोदुराणमुदम् ॥ १४ ॥

tasyātma-yonir akṛta budha ity abhidhām nṛpa buddhyā gambhīrayā yena putreṇāpoḍurāṇ mudam

अर्थ: ब्रह्मा ने उसका नाम बुध रखा, हे राजन्, उसकी गम्भीर बुद्धि के कारण; और इस पुत्र से चन्द्रदेव को महान् आनन्द मिला। (नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 14)

उर्वशी का आगमन

बुध से, इला के द्वारा, पुरुरवा उत्पन्न हुए। इन्द्र के दरबार में देवर्षि नारद द्वारा गाए जाते उनके सौन्दर्य, गुण, उदारता, शील, धन एवं पराक्रम को सुनकर, अप्सरा उर्वशी काम के बाणों से बिंधकर उनके पास आ पहुँची।

ततः पुरुरवा जज्ञे इलायां य उदाहृतः ।

तस्य रूपगुणौदार्यशीलद्रविणविक्रमान् ॥ १५ ॥

श्रुत्वोर्वशीन्द्रभवने गीयमानान् सुरर्षिणा ।

तदन्तिकमुपेयाय देवी स्मरशरार्दिता ॥ १६ ॥

tataḥ purūravā jajñe ilāyām ya udāhṛtaḥ tasya rūpa-guṇaudārya- śīla-draviṇa-vikramān śrutvorvaśīndra-bhavane gīyamānān surarṣiṇā tad-antikam upeyāya devī smara-śarārditā

अर्थ: इला से बुध का पुत्र पुरुरवा उत्पन्न हुआ। इन्द्र-सभा में देवर्षि नारद के मुख से उसके रूप, गुण, उदारता, स्वभाव, ऐश्वर्य एवं पराक्रम का बखान सुनकर, अप्सरा उर्वशी कामदेव के बाणों से आहत होकर उसके निकट आ पहुँची। (नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 15-16)

प्रसन्न होकर पुरुरवा ने उनका स्वागत किया, और उर्वशी कुछ शर्तों पर उनके साथ रहने को सहमत हुई: कि वे उनके सौंपे दो मेढ़ों की रक्षा करें, कि घी ही उनका भोजन हो, और कि वे उन्हें मिलन के अतिरिक्त कभी अनावृत न देखें। पूर्ण आनन्द से राजा ने स्वीकार किया, और अनेक वर्षों तक वे देवताओं के उद्यानों में साथ विहार करते रहे।



राजा पुरुरवा हर्षपूर्वक अप्सरा उर्वशी का स्वागत करते हैं, जो कुछ शर्तों पर उनके साथ रहने को सहमत होती हैं — जिनमें उनके दो पालतू मेढ़ों की रक्षा प्रमुख है — और अनेक वर्षों तक वे साथ आनन्दपूर्वक रहते हैं (श्लोक 17-25)।

उर्वशी का वियोग

अपने दरबार में उर्वशी को न पाकर, इन्द्र ने गन्धर्वों को उन्हें वापस लाने भेजा। अर्धरात्रि के गहन अन्धकार में आकर, उन्होंने राजा को सौंपे गए दोनों मेढ़ों को चुरा लिया। पुत्रों के समान प्रिय मेढ़ों की चीत्कार सुनकर, उर्वशी ने अपने पति को उनकी रक्षा न कर पाने के लिए फटकारा, उन्हें अपुरुष कहा। उनके शब्दों से आहत होकर, पुरुरवा एक तलवार लेकर बिना वस्त्र के अन्धकार में दौड़ पड़े — तभी गन्धर्वों ने बिजली की एक चमक फेंकी, और उर्वशी, उन्हें इस प्रकार अनावृत देखकर, अपनी शर्त का पालन करते हुए स्वर्ग को चली गई।



इन्द्र के आदेश पर गन्धर्व अर्धरात्रि में उर्वशी के दो पालतू मेढ़े चुरा ले जाते हैं; जब पुरुरवा उन्हें पुनः पाने दौड़ते हैं, तब गन्धर्वों के प्रकाश की एक चमक उनके मिलन की शर्त तोड़ देती है, और उर्वशी स्वर्ग को लौट जाती हैं (श्लोक 26-31)।

वियोग से पीड़ित, पुरुरवा एक उन्मत्त के समान पृथ्वी पर भटके, उनका मन उन्हीं पर स्थिर। सरस्वती तट पर कुरुक्षेत्र में, उन्होंने उन्हें उनकी सखियों सहित पाया और उनसे प्रार्थना की कि वे उन्हें दुःख में न त्यागें, चेतावनी देते हुए कि उनका त्यक्त शरीर भेड़ियों एवं गिद्धों का भोजन बन जाएगा।

किन्तु उर्वशी ने कठोर ज्ञान से उत्तर दिया, उन्हें एक दुर्बल मनुष्य के समान न मरने, और भेड़ियों — चंचल इन्द्रियों — को स्वयं को न खाने देने के लिए कहा।

उर्वश्युवाच

मा मृथाः पुरुषोऽसि त्वं मा स्म त्वाद्युर्वका इमे ।

क्वापि सख्यं न वै स्त्रीणां वृकाणां हृदयं यथा ॥ ३६ ॥

urvaśy uvāca mā mṛthāḥ puruṣo 'si tvaṁ mā sma tvādyur vṛkā ime kvāpi sakhyaṁ na vai strīṇāṁ vṛkāṇāṁ hṛdayaṁ yathā

अर्थ: उर्वशी ने कहा: मत मरो — तुम एक पुरुष हो; और इन भेड़ियों को तुम्हें खाने मत दो। उन्होंने उसे निराशा के विरुद्ध सचेत किया, ताकि वह चंचल इन्द्रियों रूपी भेड़ियों से न भस्म हो जाए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 36)

फिर भी उन्होंने उन्हें प्रत्येक वर्ष के अन्त में एक रात्रि उनके साथ रहने का वरदान दिया, और बताया कि उनसे उन्हें और सन्तानें होंगी।



सरस्वती तट पर कुरुक्षेत्र में, वियोग से पीड़ित पुरुरवा उर्वशी से उन्हें न त्यागने की प्रार्थना करते हैं; वे उन्हें निराशा के विरुद्ध सचेत करती हैं और प्रत्येक वर्ष के अन्त में एक रात्रि उनके साथ रहने का वरदान देती हैं (श्लोक 32-39)।

पवित्र अग्नि की खोज

उर्वशी के लोक तक पहुँचने की अभिलाषा से, पुरुरवा को अन्ततः प्रसन्न गन्धर्वों से एक अग्नि-पात्र प्राप्त हुआ। कामवश उसे उर्वशी समझ बैठकर, वे उसे लेकर वन में भटके, जब तक कि उन्हें अपनी भूल का बोध न हुआ और उन्होंने उसे छोड़ न दिया। घर लौटकर एवं उन पर ध्यान करते हुए, उन्हें, त्रेता युग के उदय के साथ, त्रिविध कर्मकाण्ड का ज्ञान अपने मन में प्रकट होता प्रतीत हुआ। उसी स्थान पर लौटकर, उन्होंने एक शमी वृक्ष के भीतर उगे अश्वत्थ वृक्ष से एक जोड़ी अरणि (मन्थन-काष्ठ) बनाई, और, उर्वशी को अधर अरणि, स्वयं को उत्तर अरणि, और उनके मिलन को बीच के बालक के रूप में चिन्तन करते हुए, उन्होंने पवित्र मन्त्रों का उच्चारण करते हुए उन्हें मथा, उनके लोक तक पहुँचने की अभिलाषा से।

उर्वशीं मन्त्रतो ध्यायन्नधरारणिमुत्तराम् ।

आत्मानमुभयोर्मध्ये यत् तत् प्रजननं प्रभुः ॥ ४५ ॥

urvaśīm mantrato dhyāyann adharāraṇim uttarām ātmānam ubhayor madhye yat tat prajananaṁ prabhuḥ

अर्थ: उर्वशी को अधर अरणि और स्वयं को उत्तर अरणि के रूप में, तथा दोनों के बीच जो है उसे उनकी सन्तान के रूप में पवित्र मन्त्रों सहित ध्यान करते हुए, प्रभु पुरुरवा ने उन्हें मथा। (नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 45)

उस मन्थन से पवित्र अग्नि उत्पन्न हुई, जिसे राजा ने तीन रूपों में पुत्र रूप में ग्रहण किया, और जिसके द्वारा उन्होंने यज्ञेश्वर भगवान् श्री हरि की आराधना की। पूर्व युगों में, शुकदेव ने बताया, केवल एक ही वेद था — ओंकार, समस्त वाणी का बीज; एक ही देवता, नारायण, और कोई नहीं; एक ही अग्नि; और एक ही वर्ग, हंस।

एक एव पुरा वेदः प्रणवः सर्ववाङ्मयः ।

देवो नारायणो नान्य एकोऽग्निर्वर्ण एव च ॥ ४८ ॥

eka eva purā vedaḥ praṇavaḥ sarva-vāṇmayāḥ devo nārāyaṇo nānya eko 'gnir varṇa eva ca

अर्थ: हमसे पूर्व के उस युग में, समस्त वाणी एक ही वेद में समाहित थी — पवित्र ओंकार; नारायण के अतिरिक्त कोई अन्य देवता नहीं था, एक ही पवित्र अग्नि थी, और मनुष्यों में केवल एक ही आश्रम था। (नवम स्कन्ध, अध्याय 14, श्लोक 48)

शुकदेव का उस एकल, अखण्ड युग का यह स्मरण (श्लोक 48) हमारे अपने समय के लिए भी एक शान्त शिक्षा रखता है। पुरुरवा जिन विस्तृत यज्ञ-विधियों को करने के लिए प्रेरित हुए, वे त्रेता युग की हैं, जिसके अनेक नियम एवं अनेक अग्नियाँ हैं; किन्तु भागवत अन्यत्र सिखाता है कि इस कलियुग में, जब ऐसा अनुशासित कर्मकाण्ड अधिकांश लोगों की पहुँच से बाहर हो चुका है, वही एक पवित्र नाम उस स्थान पर खड़ा है जो कभी अनेक वेदों एवं अनेक अग्नियों के पास था। जो ओंकार उस प्रथम युग में अपनी पूर्णता में धारण करता था, वही महामन्त्र आज हमारे लिए भगवान् के नामों में धारण करता है: वही एक नारायण, अब काष्ठ के मन्थन से नहीं अपितु कीर्तन में हृदय के मन्थन से प्राप्त। पुरुरवा की अग्नि एक अप्सरा की तड़प से उत्पन्न हुई थी; हमारी अग्नि केवल स्मरण से उत्पन्न हो सकती है, जिसे बार-बार प्रज्वलित करते हुए वह भी स्थिर होकर हरि की ओर प्रज्वलित होती रहे।

त्रेता के उदय पर पुरुरवा से वेदों का त्रिविध कर्मकाण्ड उत्पन्न हुआ, और पवित्र अग्नि के द्वारा उन्होंने गन्धर्वों का लोक प्राप्त किया।



उर्वशी के लोक की अभिलाषा से, पुरुरवा पवित्र अरणि-काष्ठों को मथते हैं और पवित्र अग्नि उत्पन्न करते हैं, जिसे वे तीन रूपों में ग्रहण करते हैं और भगवान् श्री हरि को अर्पित करते हैं — त्रेता युग के आरम्भ में त्रिविध वैदिक यज्ञ का आरम्भ (श्लोक 44-49)।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. अभिमान उच्च आत्माओं को भी भटका देता है। नक्षत्रों के स्वामी सोम उस अभिमान से नष्ट होते हैं जो उन्हें दूसरे की पत्नी हरने और युद्ध भड़काने को प्रेरित करता है। महान् शक्ति भी विनम्रता की हानि को क्षमा नहीं कर सकती (श्लोक 4-5)।
2. आसक्ति बाँधती और घाव करती है। पुरुरवा का उर्वशी के प्रति प्रेम, चाहे कितना भी सच्चा हो, एक शक्तिशाली राजा को पृथ्वी पर भटकते एक उन्मत्त में बदल देता है। अध्याय निर्भीकता से उस दुःख को दिखाता है जो किसी भी कामना-विषय से चिपकना ला सकता है (श्लोक 30-35)।
3. ज्ञानी हमें निराश न होने की सलाह देते हैं। उसे अस्वीकार करते हुए भी, उर्वशी पुरुरवा से आग्रह करती हैं कि वह एक दुर्बल मनुष्य के समान न मरे और न ही अपनी इन्द्रियों रूपी भेड़ियों से भस्म हो — विरह से शासित होने के बजाय स्वयं पर विजय पाने का आह्वान (श्लोक 36)।
4. विरह पवित्र की ओर मोड़ा जा सकता है। पुरुरवा की उर्वशी के लिए यही तड़प आराधना का बीज बन जाती है, उन्हें पवित्र अग्नि के मन्थन एवं भगवान् हरि की सेवा तक ले जाती है। कामना, पुनर्निर्दिशित होकर, भगवान् का मार्ग बन सकती है (श्लोक 44-47)।
5. समस्त विविधता एक से उत्पन्न होती है। शुकदेव स्मरण कराते हैं कि कभी एक ही वेद था, एक ही देवता — नारायण — एक ही अग्नि, एक ही जन। संसार की समस्त विविधता के नीचे एक ही दिव्य स्रोत है, जिस तक पवित्र अग्नि हमें वापस ले जाने के लिए है (श्लोक 48)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय, अपनी सतह पर, एक प्रेम-कथा है जो हानि में समाप्त होती है — किन्तु भागवत कभी केवल एक प्रेम-कथा नहीं कहता। पुरुरवा में हम स्वयं को देखते हैं: एक अच्छी एवं समर्थ आत्मा जो अपना समस्त सुख एक क्षणभंगुर वस्तु पर स्थिर कर देती है, और जब वह हाथ से फिसल जाती है तब अर्ध-उन्मत्त भटकती रह जाती है। उर्वशी का सौन्दर्य, पालतू मेढ़े, उनके मिलन की नाजुक शर्तें — यह सब चाँदनी के समान क्षणभंगुर है, और इससे चिपकना केवल दुःख लाता है। फिर भी अध्याय निराशा में समाप्त नहीं होता। कुछ उल्लेखनीय होता है: वही प्रचण्ड तड़प जो पुरुरवा को लगभग नष्ट कर देती है, अन्ततः पवित्र की ओर मोड़ दी जाती है। उर्वशी पर ध्यान करते हुए, वे एक प्रेमिका को नहीं बल्कि एक पवित्र अग्नि को मथकर उत्पन्न करते हैं, और उसे भगवान् हरि को अर्पित करते हैं। उनकी कामना की ऊर्जा, जिसने उन्हें बाँधा था, उनकी आराधना एवं उनके ऊर्ध्वगमन का ही साधन बन जाती है। और शुकदेव शान्तिपूर्वक स्मरण कराते हैं कि यह क्यों सम्भव है: क्योंकि हमारी समस्त बिखरी तड़पों के नीचे केवल एक ही था, और है — एक शब्द, एक भगवान्, नारायण। भागवत मृदुता से सिखाता है कि हमारी कामनाओं को कुचलने की नहीं बल्कि पुनर्निर्दिशित करने की आवश्यकता है; कि जो हृदय अपनी तड़प को भगवान्-प्रेम में मथना सीख लेता है, वह वहाँ, जहाँ उसे कभी केवल राख मिली थी, एक पवित्र एवं जीवित ज्वाला पाएगा।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, अपनी एक तड़प लें — एक कामना, एक आसक्ति, एक लालसा जो आपकी शान्ति को अस्थिर करती है — और, पुरुरवा के मन्थन की भावना में, उसका पीछा करने के बजाय उसे भगवान् को अर्पित करें। जब वह कामना उठे, रुकें, और पकड़ने के बजाय, उसे स्मरण में प्रज्वलित करें: मृदुता से दोहराएँ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” चाहने की उष्णता को प्रार्थना की ऊष्मा बनने दें। यदि आप घर में एक दीपक या मन्दिर

रखते हैं, तो उसे सचेत होकर जलाएँ और स्मरण करें कि प्रत्येक कामना के नीचे एक ही भगवान् नारायण के लिए एक गहरी तड़प है, जिनसे सब कुछ आता है और जिनमें लौटता है। तड़प को आराधना में मोड़ने का यह छोटा कर्म आपका अभ्यास बने, यह विश्वास करते हुए कि जो कभी अशान्ति लाया, वह भगवान् को अर्पित होकर शान्ति ला सकता है।

उपसंहार

इस अध्याय का सबसे गहरा उपहार पुरुरवा की हानि का दुःख नहीं, अपितु वह है जो वे उस दुःख से करते हैं: वे एक असहनीय तड़प को अपनी आराधना की ज्वाला बनने देते हैं। सोम का अभिमान, पुरुरवा का विरह, और उर्वशी का कठोर ज्ञान — सभी उसी सत्य की ओर संकेत करते हैं जिसे शुकदेव एक वेद एवं एक भगवान् में व्यक्त करते हैं — कि हमारी समस्त बिखरी कामनाओं के नीचे नारायण के लिए एक ही तड़प है। हम भी, पुरुरवा के समान, जो कुछ हमारे हृदय को घेरे हुए है उसे हरे कृष्ण का कीर्तन करते हुए उन्हीं की ओर मोड़ना सीखें, जब तक वह ज्वाला स्थिर होकर हमारे घर का मार्ग प्रकाशित न कर दे।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, चतुर्दश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-14-pururava-enchanted-by-urvasi-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट